IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत-चीन सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले कारक

करिश्मा

शोधार्थी, समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी)दयालबाग, आगरा

सार

भारत और चीन के बीच संबंधों को कई कारक प्रभावित करते हैं, जिनमें सीमा विवाद, व्यापारिक संबंध, रणनीतिक हित, और क्षेत्रीय प्रभाव शामिल हैं। 1962 का युद्ध, तिब्बत पर चीन का नियंत्रण, और पाकिस्तान के साथ चीन के मजबूत संबंध कुछ ऐसे ऐतिहासिक और वर्तमान कारक हैं जो संबंधों को जटिल बनाते हैं। 3,488 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) अभी भी अनिर्धारित है, जिसके कारण घुसपैठ और बुनियादी ढांचे के निर्माण को लेकर लगातार तनाव बना रहता है। दोनों देश दक्षिण एशियाई क्षेत्र में अपनी-अपनी भूमिका को लेकर प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे क्षेत्रीय प्रभाव और सुरक्षा संबंधी चिंताएं पैदा होती हैं। चीन द्वारा तिब्बत पर नियंत्रण और दलाई लामा को भारत द्वारा शरण देना भी संबंधों में एक महत्वपूर्ण कारक है। चीन और पाकिस्तान के बीच मजबूत रणनीतिक संबंध भी भारत के लिए चिंता का विषय हैं। दोनों देशों के बीच सीमावर्ती क्षेत्रों में लगातार सैन्य बुनियादी ढांचे का निर्माण हो रहा है, जिससे तनाव बढ़ रहा है।

मुख्य शब्द – भारत ,चीन, प्रतिस्पर्धा, पाकिस्तान, सीमा विवाद, तिब्बती मुद्दे, चीन-पाकिस्तान संबंध और जल विवाद,

परिचय

भारत-चीन सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित विषयों को कठोर कारकों की श्रेणी में शामिल किया गया है। जिसमे मुख्य रूप से सीमा विवाद, तिब्बती मुद्दे, चीन-पाकिस्तान संबंध और जल विवाद, चीन का भारत के प्रति बदलता रुख , चीन का एशिया के अन्य राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध आदि को इसके अंतर्गत शामिल किया हैं, जिन्हें हल करना दोनों राष्ट्रों के लिए अत्यधिक संवेदनशील एवं गंभीर मुद्दा बन गया है। ऐतिहासिक काल से भारत-चीन सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक के रूप में तिब्बत का उल्लेख किया गया है। 1959 से 1962 तक का युग अत्यंत ही संवेदनशील एवम विवादित रहा हैं। दोनों राष्ट्रों के मध्य विवादों का उदय सन् 1959 के तिब्बती विद्रोह व् उसके परिणामस्वरूप दलाई लामा का भारत में शरण लेने के कारण हुआ। जिसने दोनों देशों के मध्य गंभीर मतभेदों को जन्म दिया, जो अनंत 1962 के युद्ध का प्रमुख कारण बना। इस युद्ध ने दोनों राष्ट्रों कि विदेश नीति में आक्रामक एवं अत्यंत जटिल अवस्था को उत्पन्न किया। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में चीन तिब्बत के लिए रेलमार्ग जो दुनिया का सबसे ऊंचा एलिवेटेड रेलवे का उपयोग हिमालयी सीमा क्षेत्रों में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए आपूर्ति लाइन के रूप में किया जाना भारत की भौगोलिक सुरक्षा की दृष्टि से चिंता का विषय बन कर उभरा है । चीन की तेजी से महत्वाकांक्षी और उसके

पड़ोसियों के मध्य तनावपूर्ण एशियाई भू-राजनीतिक परिदृश्य के रूप में उजागर होता है । चीन की बढ़ती महत्वकांक्षा ने दोनों देशों के सम्बन्धों को निरन्तर प्रभावित किया है (Singh, 2020 :56-75)।

चीन-पाकिस्तान सम्बन्धों का भारत-चीन सम्बन्धों पर प्रभाव

चीन-भारत-पाकिस्तान रणनीतिक त्रिकोण एशिया का एक अभिन्न अंग बन कर उभरा है। जो सुरक्षा चुनौतियों और बदलती शक्ति गतिशीलता के गतिरोध के रूप में प्रदर्शित हो रहे है। विशेष रूप से चीन-पाकिस्तान संबंध मुख्य रूप से भारत-चीन सम्बन्धों में गतिरोध पैदा करते है। चीन द्वारा पाकिस्तान को निरन्तर सैन्य सहायता प्रदान किया जाना जिसका उपयोग भारत में पाकिस्तानी आतंकवादी गतिविधिया प्रतिकूल प्रभाव डालती है । चीन, भारत और पाकिस्तान के मध्य संबंध और समीकरण एशियाई सुरक्षा के प्रमुख चालकों में महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं । यह तीनों राष्ट्र जटिल रिश्तों के रूप में मुखरित हुए है। चीन और पाकिस्तान के मध्य सम्बन्धों को हमेशा से रणनीतिक रूप से भारत के विरुद्ध देखा गया है। चीन-पाकिस्तान रणनीतिक मजबूती भारत के लिए निरन्तर गम्भिर चिंता का विषय बनता जा रहा है, चीन की पाकिस्तान को परमाणु, मिसाइल और पारस्परिक -सैन्य सहयोग, पाकिस्तान में प्रमुख चीन द्वारा संचालित परियोजना और पीपुल्स के सैनिकों (PLA) की कथित उपस्थिति भारत-चीन सम्बन्धों को प्रत्यक्ष रूप से असहजता प्रदान करती है (Malone,& Mukherjee:2010) । द्विपक्षीय समीकरण के साथ ही इन तीन एशियाई खिलाड़ियों के संबंध, क्षेत्रीय सुरक्षा गतिशीलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। इसी क्रम में अमेरिका-भारत के घनिष्ठ सम्बन्धों ने, भारत-चीन के सम्बन्धों में तनाव की स्थति को उत्पन्न किया है , जिसका मुख्य कारण चीन की क्षेत्रीय मुखरता एवं सैन्य ,राजनीतिक तनावों में योगदान रहा है । चीन की पाकिस्तान के प्रति हितधारक, ने भारत-चीन सम्बन्धों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि चीन–पकिस्तान संबंध हमेशा से भारत के लिए एक गम्भिर चुनोती के रूप में उभरे है, जिसने भारत-चीन सम्बन्धों के साथ-साथ अन्तराष्ट्रीय समुदाय एवं एशियाई क्षेत्र को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। चीन का पाकिस्तान की तरफ अत्यधिक झुकाव भारत की भोगोलिक सुरक्षा की द्रष्टि से अत्यन्त चिंता का विषय बना हुआ है। चीन और पाकिस्तान द्वारा प्रस्तावित CPEC परियोजना भारत की संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता का प्रत्यक्ष रूप से उल्लंघन करती है, जिसके परिणामस्वरूप भारत ने द्रढता से और निरन्तर तथाकथित सीपीईसी परियोजना का विरोध किया है। यह परियोजना पाकिस्तान द्वारा अवैध रूप नियन्त्रित भारतीय क्षेत्र में कार्यरत है, हालांकि सीपीईसी योजना को भारत की सम्प्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन करने के रूप में वर्णित किया गया है,चीन एवं पकिस्तान द्वारा अन्य राष्ट्रों को इस योजना में शामिल करना ,भारत के प्रति चीन की असंवेदनशीलता को स्पष्ट दर्शाता है। चीन-पकिस्तान परियोजना भारत-चीन सम्बन्धों के साथ साथ एशियाई क्षेत्रों को भी प्रभावित करती है (Rajagopalan:2022)। भारत-चीन सम्बन्धों के मध्य सबसे महत्वपूर्ण कारक सीमा विवाद रहा है जिसने दोनों देशों के सम्बन्धों को निरंतर प्रभावित किया है जिसमें वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर भारत और चीन और नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर भारत और पाकिस्तान के मध्य सैन्य टकराव रहे है। 1962 का भारत-चीन सीमा युद्ध और एलएसी और एलओसी पर निरन्तर होने वाले संघर्षों की उत्पत्ति का लंबा इतिहास है। 1963 में चीन और पाकिस्तान के मध्य सीमा परिसीमन समझौते पर हस्ताक्षर के परिणामस्वरूप इन राष्ट्रों के मध्य त्रिकोण का सैन्य आयाम का विकस हुआ (Lamb, 2008:299-312) । इस समझौते के तहत पाकिस्तान ने ट्रांस-काराकोरम पथ, कश्मीर का एक विशेष क्षेत्र को , (जिस पर भारत दावा करता था) चीन के हाथों सौंप दिया , जिसके कारण इस राष्ट्रों के मध्य विवाद त्रिपक्षीयता का विकास प्रारम्भ हुआ । इसके अतिरिक्त 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान पाकिस्तान को अमेरिकी का समर्थन न मिलने के कारण चीन के साथ संबंधों को मजबूत करने का निर्णय लिया गया। हालाँकि चीन ने 1965 के युद्ध के दौरान अपने नए दोस्त पाकिस्तान को प्रत्यक्ष रूप से सहायता प्रदान ना करते हुए भारत के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक हमले की प्रतिक्रिया को प्रारम्भ किया (Kux:1992) । इसके अतिरिक् ,चीन के द्वारा पाकिस्तान को परमाणु बम विकसित करने में सहायता प्रदान करना, भारत-चीन सम्बन्धों को प्रभावित करने का एक मुख्य कारक के रूप में हमेशा से वर्णित किया गया है । शीत युद्ध के बाद एक वैश्विक शक्ति के रूप में भारत-चीन का उदय हुआ, जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों के संबंधों की गतिशीलता में परिवर्तन हुआ, जिससे भारत-चीन प्रतिस्पर्धा का विकास हुआ और चीन-पाकिस्तान सैन्य संबंध मजबूत हुए। इस मध्य भारत-पाकिस्तान संबंधों के मध्य निरन्तर अस्थिर अवस्था का मुख्य कारण पाकिस्तान में उत्पन्न होने वाले सीमा पार आतंकवाद ने भारत को निशाना बनाया जो संबंधों को सामान्य बनाने में एक लंबी बाधा के रूप में उभरा । (Harshe,2003,3321-3625) वर्तमान समय में इन राष्ट्रों के त्रिभुज सम्बन्धों ने भारत-चीन सम्बन्धों को निरन्तर प्रभावित किया है, इसके अतिरिक्त इन देशों ने अधिकांश रूप से अन्तराष्ट्रीय रणनीतिक श्रृंखला एवं दक्षिणी एशिया की सुरक्षा गतिशीलता, रणनीतिक परिदृश्य को प्रभवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (Salik ,?) । इसी अनुक्रम में चीन का भारतीय समुद्री और महाद्वीपीय में प्रभाव लगातार

भारत-चीन सम्बन्धों को प्रभावित करता। चीन अपने महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई), चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) जैसी विवादास्पद परियोजनाओं के माध्यम से, पाकिस्तान तक अपनी रणनीतिक पहुंच को मजबूत करना स्वाभाविक रूप से भारत की भोगोलिक सुरक्षा की दृष्टिकोण से गम्भिर चिंता का विषय बन के उभरा है। इसलिए त्रिकोण में परस्पर जुड़ी खतरे की धारणाओं और प्रतिक्रियाओं ने भारत-चीन सम्बन्धों के साथ दक्षिणी एशिया की भू-राजनीति को भी प्रभावित किया है। चीन, भारत और पाकिस्तान के क्षेत्रीय रुख ने दक्षिणी एशियाई क्षेत्र में सुरक्षा दुविधा को अधिक गंभीर और संघर्ष की संभावनाओ को जन्म दिया है (Harshe:2003)।

भारत--अमेरिका संबंध और चीन

भारत-चीन सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले कारकों को श्रंखला में सयुंक्त राष्ट्र अमेरिका को भी एक प्रमुख कारक के रूप में वर्णित किया गया है। अमेरिका वर्ष 1988 से भारत-चीन सम्बन्धों में एक कारक के रूप में निरन्तर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जिसने दोनों राष्ट्रों की विदेश नीति को समय-समय पर प्रभावित किया। चीन-यू.एस सहकारी पक्ष ने भारत के समक्ष एक चुनोती को उत्पन्न किया है। उल्लेखनीय है की, वर्तमान समय में भारत और अमेरिका के संबंध चीन के साथ विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संभावित रूप से अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संघर्ष के रूप में वर्णित किये जाते हैं। चीन का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शक्ति संघर्ष भरे व्यवहार, दक्षिण एशिया और पूर्वी एशिया, हिंद महासागर में बढ़ती विस्तारवादी भावना ने भारत और अमेरिका साझेदारी को आगे बढ़ाने में योगदान दिया है। विशेषकर अमेरिका और भारत के मजबूत रिश्तों के उत्थान की तीन महत्वपूर्ण अनिवार्यताएं है। उदाहरण के रूप में दोनों राष्ट्रों के रणनीतिक हित (खासकर चीन के उदय के संदर्भ में),आर्थित हित और साझा लोकतांत्रिक मूल्य। इसके अतिरिक्त चीन की बढ़ती विस्तारवादी नीतियों ने भारत और अमेरिका की साझेदारी को मजबूत करने में योगदान दिया है (Madam,2014)। दूसरा मुख्य कारण भारत और अमेरिका के समीप आने का हिंदमहासागर चीन के उदय एवं उसके प्रभुत्व नियंत्रित करना है। दूसरी तरफ भारत का अमेरिका की ओर झुकाव एवं QUAD के माध्यम से हिंद महासागर में चीन की बढती गतिविधिओं पर नियंत्रण स्थापित करना आदि ने चीन के समक्ष चुनौती को जन्म दिया है। जिसके परिणामस्वरूप दोनों राष्ट्रों में अस्थितिरता एवं असमानता की भावना का विकास हुआ (LiLi, 2023:107-133)। नवंबर 2014 में, राष्ट्रपति ओबामा ने इस बात पर जोर दिया कि अमेरिका "भारत के लिए एशिया प्रशांत क्षेत्र में एक बड़ी भूमिका का समर्थन करता है।" बदले में, मोदी सरकार ने इस क्षेत्र को विदेश नीति की प्राथमिकता के रूप में स्वीकार किया। प्रधान मंत्री मोदी ने "विस्तारवादी मानसिकता" वाले देशों के बारे में अपनी चेतावनी के साथ, इस क्षेत्र में (और संभावित रूप से हिंद महासागर में) चीनी व्यवहार की आलोचना की। अपने पूर्ववर्ती से हटकर, उनकी सरकार ने वियतनाम और अमेरिका के साथ संयुक्त बयानों में दक्षिण चीन सागर में नेविगेशन की स्वतंत्रता के लिए अपना समर्थन व्यक्त करने की इच्छा दिखाई है। एक ऑप-एड में, प्रधान मंत्री ने यह भी कहा कि भारत-अमेरिका साझेदारी "एशिया और प्रशांत क्षेत्रों में शांति, सुरक्षा और स्थिरता को आगे बढ़ाने में बहुत महत्वपूर्ण होगी और, सितंबर में, राष्ट्रपति ओबामा और उन्होंने "क्षेत्रीय शांति और स्थिरता को बनाए रखने में अपने साझा हित की पुष्टि की, जो कि महत्वपूर्ण हैं" एशिया प्रशांत क्षेत्र की निरंतर समृद्धि की और अग्रसर करते है (Madan,2014)। निसंदेह भारत एक उभरती हुई शक्ति और एक महत्वपूर्ण उभरता हुआ भागीदार राष्ट्र है, अमेरिका-भारत में चीन के उत्थान को लेकर साझा चिंताएं हैं। वर्तमान में चीन की अधिक मुखर, आक्रामक भूमिका ने भारत और अमेरिका के मध्य नजदीकियों को विकसित किया है। इसके अतिरिक्त 2016 में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा एनएसजी में परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में भारत को सदस्यता दिलाने के प्रयासों ने भारत चीन सम्बन्धों को प्रभावित किया । भारत-अमेरिका साझेदारी "एशिया और प्रशांत क्षेत्रों में शांति, सुरक्षा और स्थिरता को आगे बढ़ाने में बहुत मूल्यवान होगी (Curtis. and Madan.,2024 :P.6)

चीन द्वारा भारत के परमाणु निर्यात कल्ब एवं संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता का विरोध

एनएसजी परमाणु सामग्री, उपकरण के अवैध हस्तांतरण पर प्रतिबन्ध के लिए एक समर्पित मंच है जो परमाणु और परमाणु-सम्बन्धी निर्यात के लिए दिशानिर्देश लागू करके परमाणु प्रसार को रोकने के लिए कार्य करता हैं भारत द्वारा निरन्तर एनएसजी की सदस्यता का प्रयास किया जा रहा है, परन्तु भारत की एनएसजी सदस्यता पर चीन के द्वारा विरोध ने दोनों राष्ट्रों के सम्बन्धों को प्रभावित करने के साथ-साथ मतभेदों की भावना को और अधिक मजबूत किया है। चीन द्वारा निरतंर अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भारत के विरुद्ध उठाये गये कदमों ने दोनों राष्ट्रों के सम्बन्धों को कमजोर किया है, हालांकि चीन ने भारत को 2008 की एनएसजी सदस्यता में रोकने में सशक्त एवं सफल भूमिका निभाई। चीन ने मुख्य रूप से

एनपीटी का पालन न करने के आधार पर भारत की सदस्यता को बाधित किया (Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses:2016) । भारत द्वारा एनपीटी पर हस्ताक्षर करने का चीनी आग्रह अप्रासंगिक है, क्योंकि, भारत के अनुसार एनपीटी की नींव त्रुटिपूर्ण है जो परमाणु 'संपन्न' और 'नहीं है' के बीच भेदभाव की भावना की जन्म देती है । हालांकि एनपीटी में यह मूलभूत दोष उन अप्रसार उद्देश्यों के साथ टकराव पैदा करते है जिनके लिए भारत खड़ा है। भारत के लिए एनपीटी का प्रमुख उद्देश्य एक न्यायसंगत तंत्र जो समयबद्ध, सार्वभौमिक निरस्त्रीकरण के प्रति साझा जिम्मेदारी का समर्थन होना चाहिए। एनपीटी की भेदभावपूर्ण स्थिति के बावजूद, एनएसजी ने स्वीकार किया कि भारत 'परमाणु हथियारों के अप्रसार पर संधि के प्रावधानों और उद्देश्यों के व्यापक संभव कार्यान्वयन' में महत्वपूर्ण योगदान देता है (MEA2016)। हालांकि चीन ने गलत तरीके से भारत की एनएसजी प्रविष्टि को पाकिस्तान के साथ जोड़ा है,परन्तु भारत के विपरीत, पाकिस्तान का प्रसार रिकॉर्ड स्पष्ट रूप से अत्यधिक खराब है । पाकिस्तान की तुलना में भारत ने घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर परमाणु सुरक्षा में सुधार की पहल को मजबूत करने में लगातार योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, इसने 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद स्थगन की घोषणा करके व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) का समर्थन किया। विशेष रूप से, भारत-अमेरिका नागरिक परमाणु समझौते के हिस्से के रूप में एफएमसीटी की वार्ता पर पूर्ण सहयोग देने पर सहमत हुआ। इसलिए, अप्रसार प्रतिबद्धताओं और महत्वाकांक्षाओं के मामले में भारत को पाकिस्तान के साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिए (Xiaoqiang,:2016) । चीन ने दावा किया है कि एनएसजी में भारत के प्रवेश से दक्षिण एशिया में रणनीतिक असंतुलन और पाकिस्तान के रणनीतिक हितों को आघात पहुँचाने का कार्य करेगा। (Kazi:2016)

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद

वर्त्तमान में भारत चीन समबन्धों के मध्य मतभेदों की कड़ी में चीन द्वारा भारत की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता का विरोध एक महत्वपूर्ण विषय है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने विदेश मामलों की संसदीय सलाहकार समिति की बैठक में कहा गया कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के पांच स्थायी सदस्यों में से चीन एकमात्र देश है जो संयुक्त राष्ट्र के सर्वोच्च निकाय में भारत के प्रवेश का विरोध कर रहा है (The Econimic Times:2023)। वर्तमान में अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भारत-चीन संबंधों की स्थिति के आधर पर कहा जा सकता है की आगामी भविष्य में चीन द्वारा यूएनएससी में भारत की स्थिति का समर्थन करने की असंभावना है (The times of India :2023) ।

चीन की मोतियों की माला (स्ट्रिंग ऑफ पर्ल) रणनीति: भारत के समक्ष एक गम्भिर चुनौती

मोतियों की माला रणनीति आईओआर (IOR) में चीन के आर्थिक, सैन्य, राजनयिक और राजनीतिक वर्चस्व को बनाने पर केंद्रित है। चीन की इस पहल ने भारत-चीन सम्बन्धों को प्रभावित करने के साथ-साथ एशियाई राष्ट्रों को भी प्रभावित किया है। चीन की इस रणनीति का नामकरण 2005 में, "स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स" शब्द को बूज़ एलन ने "एशिया में ऊर्जा भविष्य" नामक अपनी रिपोर्ट में किया था। बूज़ एलन के अनुसार चीन एशियाई राष्ट्रों में आर्थिक सहायता, आर्थिक निर्माण एवं मित्रवत राज्यों में बुनियादी ढाँचे विकसित करने के माध्यम से सम्पूर्ण आईओआर में अपनी नौसैनिक उपस्थिति का विस्तार करने का प्रयास कर रहा है(Baker,2015)।चीन आईओआर में अपने राष्ट्रिय हितों को सुरक्षित करने की निरन्तर प्रयास कर रहा है। चीन मोतिओं की माला के मध्य से श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमार और मालदीव में बुनियादी ढांचे का निर्माण भारत के विरुद्ध प्रतिक्रियाओं को दर्शाता है। उदाहरण के रूप में पाकिस्तान में, चीन द्वारा ग्वादर बंदरगाह पर बुनियादी ढांचे का निर्माण करना(रणनीतिक रूप से होर्मुज जलडमरूमध्य से केवल 240 मील की दूरी पर स्थित है), चीन के लिए श्रीलंका में, हंबनटोटा बंदरगाह का निर्माण अत्यंत बहुत महत्व माना गया है, क्योंकि यह प्रमुख हिंद महासागर के पूर्व-पश्चिम शिपिंग मार्ग से लगभग 6 समुद्री मील दुरी पर है उल्लेखनीय है की चीन यह सभी प्रतिक्रियाये चीन के प्राकृतिक संसाधनों (विशेष रूप से तेल) के प्रवाह की सुविधा प्रदान करती है (Marshal Jr 2012)। वर्तमान में चीन समुद्री श्रेष्ठता एवं रणनीति उद्देश्य प्राप्त करने हेतु रणनीतिक रूप से एशियाई राष्ट्रों के साथ समबन्ध स्थापित कर रहा है। चीन बीआरआई के तहत स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स को लागू करके आईओआर में अपनी स्थिति में सुधार करना है। 21वीं सदी में चीन की रणनीतिक संस्कृति आर्थिक विकास, व्यापार और समुद्री सुरक्षा से प्रभावित होती है। वर्तमान में, चीन की रणनीतिक संस्कृति में सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा 'सक्रिय रक्षा' का सिद्धांत माना गया है । इस अवधारणा को रक्षा और अपराध के बीच संतुलन के रूप में वर्णित किया गया है चीन की इस अवधारणा ने वैश्विक एवं एशियाई स्थिति को प्रभावित किया है (Gries, 2008, 101-105)। चीन 21वीं सदी में हिंद महासागर में भारत एवं अमेरिका के प्रभुत्व को

चुनौती देते हुए एक महान समुद्री शक्तिके रूप में उभरा है।(Kim:2011)। चीन की विदेश नीति में BRI को एक आधारशिला के रूप में देगा गया है। चीन की इस महा परियोजना ने एशिया, मध्य पूर्व, यूरोप और अफ्रीका तक अनुमानित मार्गों के साथ 60 देशों तक विस्तार किया है। हाल ही में भारत-मालदीव संबंधों में अभूतपूर्व गिरावट और द्वीपों में एक चीनी 'अनुसंधान' जहाज के डॉकिंग ने प्रसिद्ध 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' की चीनी रणनीति के पुनरुत्थान के बारे में चिंताएं उत्पन्न की है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत को चीनी चौकियों से घेरना और पड़ोसी राज्यों पर अपना प्रभुत्व बनाए रखना है। म्यांमार में क्याउकफ्यू बंदरगाह (कंबोडिया में चीन के नौसैनिक अड्डे, श्रीलंका में हंबनटोटा और पाकिस्तान में ग्वादर के अलावा, जिबूती बंदरगाह पर एक नौसैनिक स्टेशन के अलावा) के माध्यम से चीन का रणनीतिक दबाव भारत के पूर्वी कमान पर भारत के परमाणु हमले पनडुब्बी बेस को खतरे में डालता है। चीन का एशियाई राष्ट्रों के साथ घनिष्ट संबंध भारत के समक्ष खतरा एक गंभीर चुनौती पैदा करते है।(Yu, ,2016) बंदरगाहों के विकास के माध्यम से हिंद महासागर में चीन के नौसैनिक परिचालन में वृद्धि ग्वादर (पाकिस्तान), चटगांव (बांग्लादेश), क्याउकफ्यू (म्यांमार) में, 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' के साथ, इस दशक में चीन का मुख्य केंद्र बिंदु रहा है (Kim, 2013,193–204, । हालांकि बीआरआई चीन को मध्य एशिया और रूस के माध्यम से यूरोप, मध्य एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के माध्यम से फारस की खाड़ी, दक्षिण एशिया और हिंद महासागर से जोड़ने का कार्य किया है। ये परियोजनाएं चीन, यूरोप और एशिया के बीच व्यापार और राजनीतिक संबंधों को बढ़ाने के लिए अग्रसर हैं।(Rolland, 2015,) निस्संदेह प्रशांत महासागर में उल्लेखनीय रणनीतिक अनिवार्यताएं और नौसैनिक उपस्थिति को बढ़ाने वाले लक्ष्यों ने चीन को निरन्तर अग्रसर किया है। जिसने दोनों देशों के सम्बन्धों को प्रभावित करने के साथ-साथ भारत के समक्ष निम्नलिखित चुनौतियों को उत्पन्न किया है (Express Tribune, April 16, 2017)

निष्कर्ष

भारत-चीन के समबन्धों को प्रभावित करने वाले कारकों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है। भारत चीन समबन्धों को प्रभावित करने वाला सर्वप्रथम मूल कारक सीमा विवाद है। सन् 1950 के दशक से ही सीमा विवाद ने दोनों राज्यों के मध्य गम्भिर समस्या एवं अविश्वास की भावना को विकसित किया। वर्तमान समय में सीमा समस्या ने दोनों देशों के सम्बन्धों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक दूसरे के प्रति अनेक क्षेत्रों में असहयोग की भावना को विकसित किया है। सीमा विवादों के चलते दोनों राज्यों के राजनीतिक ,आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए है। दोनों पड़ोसी राज्यों को गम्भिर सीमा विवादों को सुलझा कर सम्बन्धों के मध्य स्थिरता एवं सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता पर बल देना चाहिए,जिससे फलस्वरूप आपसी द्विपक्षीय समबन्धों को सुदृण किया जा सके। विवादित सीमाओं पर अधिक अस्थिर प्रतिक्रियाओं के अलावा, आतंकवाद और अप्रसार जैसे विषयों और क्षेत्रीय सुरक्षा स्थिति पर वैश्विक मंचों पर मतभेदों ने भी दोनों पक्षों के सम्बन्धों को प्रभावित किया हैं। सीमा विवाद के उपरांत दोनों पक्षों के सम्बन्धों को प्रभावित करने में चीन-पाकिस्तान सम्बन्धों ने भी अधिक योगदान दिया है। चीन का पाकिस्तान की तरफ अत्यधिक झुकाव एवं सहयोग की भावना ने भारत- चीन सम्बन्धों को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाई है। चीन और पाकिस्तान संबंध ,भारत के लिए के सुरक्षा की दृष्टि से एक विशाल चुनौती है। हालांकि, भारत-पाकिस्तान-चीन त्रिकोण संबंध सापेक्ष राष्ट्रीय शक्ति और आपसी खतरे की अनेकों धारणाओं को भी निर्धारित किया है। भारत-पाकिस्तान-चीन त्रिकोण संबंध एक जटिल गतिशीलता को उत्पन्न करते है। भारत और पाकिस्तान के बीच शक्ति विषमता और भारत और चीन के बीच बढ़ते शक्ति असंतुलन ने सुरक्षा दुविधा को उत्पन्न किया है। उल्लेखनीय है की, चीन-भारत-पाकिस्तान रणनीतिक त्रिकोण बड़ी एशियाई तस्वीर का एक अभिन्न अंग बन कर उभरे है, जो नई सुरक्षा चुनौतियों और बदलती शक्ति गतिशीलता की की मूल विशेषता है। विशेष रूप से चीन-भारत संबंध, और भारत के प्रतिकार के रूप में पाकिस्तान को आगे बढ़ाने में मदद करने हेतु चीन की सैन्य सहायता के भारत के लिए भविष्य में गम्भिर चुनौतीया उत्पन्न कर करती है। वही दूसरी तरफ संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते मतभेदों ने भारत -अमेरिका के सम्बन्धों को मजबूती प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त दोनों राज्यों की मजबूत गठजोड़ का मूल कारक चीन के एशिया एवं हिंदमहासागर बढते वर्चस्व को सिमित कर शक्ति संतुलन की स्थापना करना है। इसके उपरांत चीन का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर UNO एवं NSG जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में भारत के विरुद्ध अपनाई गयी प्रतिक्रियाओं ने भी दोनों पड़ोसी राज्यों के सम्बन्धों को प्रभावित करने में भूमिका निभाई है। अंत में कहा जा सकत है, की दोनों राज्यों को सबंधों को सुदृण करने हेतु माध्यम मार्ग अपनाने की अत्यंत आवश्कता है। अंत में सम्पूर्ण अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है की वर्तमान समय में भारत और चीन के संबंध असंतुलन की अवस्था में प्रतीत होते है। दोनों राज्यों के मध्य अनेक प्रकार के मतभेदों ने

इनके द्विपक्षीय सम्बन्धों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभवित किया है। दोनों पक्षों वार्तालाप के मध्य से आपसी सम्बन्धों को सुदृण करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूचि

1. Singh,Z.D.(2020), "Power Shift: India-China Relations In a Multipolar World" Macmillian, pp 56-75।
2. Malone,D.M.& Mukherjee R.(2010), "India and china Conflict and Cooperation", available at https://lkyspp.nus.edu.sg/docs/default-source/faculty publications/india_and_china_conflict_and_cooperation.pdf।
3. Rajagopalan.R.P,(2022), "India's Letest Concerns with the china Pakistan Economic Corridor", available at https://www.orfonline.org/research/indias-latest-concerns-with-the cpec/#:~:text=A%20Indian%20Ministry%20of%20External,so%2Dcalled%20CPEC%2C%20w hich%20are
4. lamb, A. (2008), "The Sino-Pakistan Boundary Agreement Of 2 March 1963" , Australian Journal of International Affairs, Volume.18, Issue-3,pp.299-312
5. Kux, D.(1992**)** "India and the United States Estranged Democracies,1941-1991", National Defense University Press
6. Salik ,N.(?), "Learning to Live With the Bomb Pakistan: 1998-2016", Oxford University press
7. Harshe,R. (2003), " Cross-Border Terrorism: Road-Block to Peace Initiative", Vol..38, No.35,Economic and Political Weekly, pp.3321-3625
8. Madam, T.(2014), "The U.S.-India Relationship and Chin" Available at https://www.brookings.edu/articles/the-u-s-india-relationship-and-china/ ।
9. Lili,(2023), "The U.S Factor and the Evolution of China-India Relation " Published by: The China Review, Vol.23, N.1, pp.107-133 available at https://www.jstor.org/stable/48717990 Accessed on 28/5/2023
10. Curtis,L. and Madan.T. (2024): "US Views of India-China ties and their impact on the US-India Partnership ":GLOBAL INDIA PODCAST The Brookings Institution, Washington, D.C., P.6।
11. Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses, (2016), "India's NSG Bid: the next Round" available at https://www.idsa.in/idsanews/india-nsg-bid-the-next-round
12. Ministry of External Affiars (2016), vailable at https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/26949/Spokespersons+comments+on+NSG+Plenary+meeting+in+Seoul
13. Xiaoqiang, F.(2016), "Beijing Could Support India's NSG Accession Path if it plays by rules" available at https://www.globaltimes.cn/content/988607.shtml
14. Kazi,R. (2016), "India, the NSG, and the Chinese Impasse " Available at https://www.e-ir.info/2016/07/20/India-the-nsg-and-the-Chinese-impasse/#google_vignette
15. The Econimic Times ,(2023),"China only P5 nation opposing India's UNSC entry: S Jaishankar" avilable at https://economictimes.indiatimes.com/news/india/china-only-p5-nation-opposing-indias-unsc-entry-s-jaishankar/articleshow/102458250.cms?from=mdr
16. The times of India ,"Still just five: With an even more aggressive China against UNSC permanent membership for India, reform looks tough", 12/ September/2023 Available at https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/toi-editorials/still-just-five-with-an-even-more-aggressive-china-against-unsc-permanent-membership-for-india-reform-looks-toug Accessed on 16/9/2023
17. Baker, B.D.(2015), "Where is the 'String of Pearls' in 2015?," Diplomat, available at http://thediplomat.com/2015/10/where-is-the-string-of-pearls-in2015/
18. Marshal Jr. (2012),"The String of Pearls: Chinese Maritime Presence in the Indian Ocean and its effect on Indian Naval Doctrine," available at http://calhoun.nps.edu/bitstream/handle/10945/27865/12Dec_Marshall_Richard.pdf ?sequence=1
19. Gries, P.H.(2008), "China's Rise: A Review Essay," Asian Security Vol. 4, No. 1 pp.101-105,

20. Kim,S.P.(2011): "An Anatomy of China's 'String of Pearls' Strategy," available at http://www.biwako.shiga-u.ac.jp/eml/Ronso/387/Kim.pdf l pp.193-204
21. Yu,H.(2016),"Motivation behind China's 'One Belt, One Road' Initiatives and Establishment of the Asian Infrastructure Investment Bank," Journal of Contemporary China, availabble at DOI: 10.1080/10670564.2016.1245894 http://dx.doi.org/10.1080/10670564.2016.1245894
22. Kim,H.(2013),"The Implications of the Chinese 'String of Pearls' for the US Return to Asia Policy: the US, China and India in the Indian Ocean," J Glob Policy Gov, no. 2, , available at DOI 10.1007/s40320-013-0032-5 pp193–204
23. Rolland, N.(2015), "China's New Silk Road," The National Bureau of Asian Research, available at http://www.nbr.org/research/activity.aspx?id=531.
24. Express Tribune,(2017), "Nepal, China begin first-ever Joint Military Exercise," available at https://tribune.com.pk/story/1385226/nepal-china-begin-first-ever-jointmilitary-exercises.